

DPN 5633

Title : अन्नपूर्ण स्तोत्र / ANNAPŪRṆA STOTRA

Run. No. 6324

Cat. No. 163

Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 17.5 x 8

Folios 5

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator शंकराचार्य

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
श्री अन्नपूर्णादेव्यै नमः ॥ मित्यानन्द करी वरा भय करी, सौन्दर्य रत्ना करी,
चिह्नितारिषिण घोर पावन करी, प्रत्यक्ष माठे करी ॥ प्राग्ज्योतिषा वरदा पावन करी ;
काशीपुरा धीमती, हिमालये ही कृपा विजय करी मातान्नपूर्णे करी ॥ १ ॥

centimeter 5

10

15

20

समाप्ति वाक्य / Colophon

इति श्री श्रीगुरुवाय्य विरचितं अन्न भूषणः समाप्तः ॥ ॥ ॥ शुभमस्तु ॥



0

CMTS.

5

10

15

20

25

5

15

10

5

रधाभ्रत्रयर्णदिव्येनमः॥ ॥निग्यानचकरीवना
रुपकरी सोन्दर्यनलाकरी निर्दुगाखिलधोत्रयाव
नकरी सुषुक्माहध्वरी॥यालयाचलवर्णयावनक
री काशीपूनाधीध्वरी हिक्काद्विहृयाविलंबनकरी
मागान्वधूरुध्वरी॥ १ ॥नानोनलविचित्ररुप

लकरीः दमाच गाउचरीः मुकाहान विलस द्द कीऊ क
मृलली ॥ काष्ठी नाउ नली किगान चिकरी काणीय
धीष्ठी रिकी द हि कया विलमन कनी मा गान वरु
ष्ठी ॥ २ ॥ योगनन कनी निपुदय कनी धर्म
कनिष्ठा कनी चला कानल लसमानन कनी खलो

वन हा कनी ॥ सर्वेष्ठी कनी गय रुल कनी काष्ठी य
नाधीष्ठी रिकी द हि कया विलमन कनी मा गान वरु
ल्लीष्ठी ॥ ३ ॥ कला भावल कदलालय कनी रगे
नी उमा ष्टी कोमानी निगमार्थ गचन कनी उका
नवीजा कनी मा रुदा न कपाठ पागन कनी काष्ठी य

गधीध्वनीः हि कांदहि कया विलम्बन करी मागान्न पूरु
ध्वनी॥ ४ ॥ दृग्ध दृग्ध विलम्बन करी खमाद्यु
राखुदरी लीलानाटकसुखक गन करी विज्ञानदी
यी करी॥ धी विलम्बन मन भयमादन करी काशीय
धीनीः हि कांदहि कया विलम्बन करी मागान्न पूरुध्व

नी॥ ५ ॥ एव सर्वजन ध्वनी गिलहरी मागान्न
पूरुध्वनी नीली नील समान कल करी निगान्न
दान ध्वनी॥ सो गान्न करी सदा गिव करी काशीय
गधीध्वनीः हि कांदहि कया विलम्बन करी मागान्न
पूरुध्वनी॥ ६ ॥ अदि कान्न समस्त वर्णन करी ॥

सुपारवांकरी काभीरीरियनधनीमिलदनी निषी
करीसर्वनी ॥ कामाकीरुकरी मनासंबकरी काभी
पनाधीधनी रिदादृदिदुपाविलम्वनकरी मानान्न
पूरुधनी ॥ १ ॥ दधीखर्कविधिउतखविना
दककरीसीलिना वामपायसूरुपायविधना

सोराग्यमादधनी ॥ रुकारीरुकरीरुलानसकरी का
भीपनाधीधनी रिदादृदिदुपाविलम्वनकरी माना
न्नपूरुधनी ॥ २ ॥ चडाकानलकोटिकोटिगु
लिना वालाकवर्कधनी चडाकानिसमानकुरु
लधनी चडाकविन्धाधनी ॥ नानायसुकेयाभीका

दूषाधनीः काष्ठीयः प्राधाधनीः रिक्तादहिकृपाधि-
 लेभ्यनकरीमागान्नयूल्भ्यनी ॥ २ ॥ सर्वशाल-
 कनीमहालयहनीमागान्नयूल्भ्यनीः साक्षात्माद-
 कनीनिगमयकनीः विरब्धनीः प्राधाधनीः ॥ ३ ॥ कानन्दक-
 नीः जगन्मयकनीः काष्ठीयः प्राधाधनीः रिक्तादहिकृपाधि-

कृपाविलम्बनकरी माणा नमू लब्धवरी ॥ १० ॥
 अ नमू लब्ध सदायु लब्ध क नया लव लभ ॥ क्लानवेना
 गमिद्यर्थे लिङ्गमिदं दिवा र्वीणि ॥ ११ ॥
 ०० निशीर्षक नाचार्य विन विर्गज नमू लब्ध स्मः समा
 प् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१६३ ~~अ~~ अ-पुण्ड्रलोक १६३